पिताश्री ऊँ प्रातःक्लास

31.8.65 R-जाग सजनियॉ.....ओमशांति। गीत का अर्थ तो बहुत सहज है। यह भी चक्र का अर्थ है। जो समझते हैं हम इनका अर्थ समझा सकते हैं वो आकर यहॉ सुनावें। जगली....नहीं बनना है। यह तो तुम जानते हो जो पूरे बाप के बने हैं वर्सा भी पूरा पावेंगे ; क्योंकि पूरे सरेंडर हैं। शिवबाबा को पूरा देते हैं फिर पूरा लेते हैं। बाबा ने एक बच्ची से पूछा तुमको सन्तान कितना है?तो बोला 8 है। ब्राह्मणी बोली कि नहीं इनको 7 बच्चे हैं। हम तो समझ गए है कि बच्ची ठीक बोलती है ; क्योंकि वारिस तो बनाना है ना। बलि चढ़ना है। बाप बच्चे पर बलि चढ़ते हैं। यह है ईश्वरीय कालेज। इन बातों को जंगली जानवर मनुष्य समझ नहीं सकते। यह तो बच्चे समझ गए इनको वारिस बनाने से रिटर्न में 21 जन्म का वर्सा लेते हैं। बलि चढ़ते हैं ना। जैसे अरविंदो घोष का आश्रम है। आनन्दपुर वाले हैं। वहॉ जाकर मनुष्य बैठते हैं ; परंतु रिटर्न में कुछ भी नहीं मिलता। धूल भी नहीं तो छाई भी नहीं। यहॉ तो बाप है। गाया भी हुआ है तेरे पर बलिहार जाऊँगी। वारी जाने का अर्थ भी कई समझते नहीं हैं। बुद्धू हैं। जैसे बाप बच्चे पर बलि चढ़ते है। यहॉ फिर बच्चे बाप पर बलि चढ़ते हैं तब बाप वर्सा देते हैं। यह हिसाब फिर ऐसा है इस जन्म में तुम बलि चढ़ते हो फिर 21 जन्म लिए बाप बलि चढ़ते हैं। बच्चा कोई बाप पर बलि चढ़ते नहीं हैं। बाप बलि चढ़ते हैं। यह कायदा है। गाते भी हैं मेरा तो एक दूसरा ना कोई। ना मामा , ना चाचा कुछ भी नहीं। मेरा शरीर , मेरे मातपिता यह शारीरिक सम्बन्ध है। बाप तो है निराकार। तो हम एक निराकार बाप पर ही बलि चढ़ते हैं। बाप से जरूर 21 जन्मों का राज्य लेंगे वो अपन को देखना है। हम पूरे बलि चढ़ते हैं। यह है दिल की बात। गृहस्थ व्यवहार में रहते , गृहस्थ का पालन करते हुए तुमको बलि चढ़ना है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में भल रहो ; परंतु कमल फूल समान पवित्र बनो। बुद्धि में यह याद रखो हम 84 जन्म कैसे लिए हैं। अब फिर बाप के आय बने हैं। बच्चों आदि सबकी सम्भाल करनी है ; परंतु बुद्धि में यह रहे कि यह सब कब्रदाखिल होने हैं। अब हमको बाप के पास जाना है जिसके लिए ही बाप को याद करते हैं। बलि चढ़ते हैं। जिसका एवजा फिर सतयुग में मिलता है। गृहस्थ व्यवहार में तो रहना है। रहते हुए बलि चढ़ो। बाबा यह सब कुछ आपका ही दिया हुआ है। हम ट्रस्टी हो सम्भाल रहे हैं। मनुष्य तो सिर्फ कहने मात्र कहते हैं यह सब ईश्वर का दिया हुआ है। फिर बच्चा मर जावेगा तो रोने लग पड़ते। यहॉ तो रोना ना है। जानते हैं यह तो पराई चीज हो गई। जिसके थे उनके हो गए। चीज तो उनकी है जिसने दी है। हम उनके डायरैक्शन अनुसार गृहस्थ व्यवहार को सम्भाल रहे हैं। श्रीमत लेनी है। यह तो सहज है ना। बाप ऐसे तो नहीं कहते कि जमीन आप अगर तगर सब ले आओ। यह तो एक किसम का सन्यास हो गया। तुमको तो इस पुरानी दुनियॉ से नई दुनियॉ में जाना है। वो सन्यासी ऐसे नहीं समझते। वो तो जरूर घर–बार छोड़ देते हैं। यह तुम अभी जानते हो कि हम नई दुनियॉ में जाते हैं। पुरानी दुनियॉ को बुद्धि से भूलते जाते हैं। यह समझने की बात है ना। सब कुछ छोड़ बाप पास कहॉ आकर बैठेंगे। हॉ , अंत में आकर बैठेंगे। जो2 रहने वाले होंगे वो आकर रहेंगे सेफ्टी के लिए। उसी समय तो दुनियॉ में मारा–मारी आदि हंगामा बहुत हो जाता है। विनाश तो होना ही है। दूसरा कोई भी नहीं जानता। तुम जानते यह नैचुरल कैलेमिटीज, सिविल वार आदि यह सब जल्दी आना है। पिछाड़ी में तुमको बहुत खुशी रहेगी। सा. आदि होते रहेंगे। कहते हैं ना जो हमने देखा सो तुमने ना देखा। जो तुम बच्चों ने देखा सो नए बच्चों ने ना देखा। फिर जो नए बच्चों ने देखा वो भागन्ति वालों ने ना देखा। यह ज्ञान की बातें हैं। वो लोग शास्त्र ही पढ़ते हैं तो बुद्धि में शास्त्र ही याद पड़ते रहेंगे। तुम कहेंगे हमको शिवबाबा ने जो समझाया है वो सुनाते हैं। परमपिता शिववंशी तो सब हैं ना। हम शिववंशी हैं यह तो सबको पता होना चाहिए। ऊपर में लिखना ही होता परमपिता परमात्मा शिववंशी

फिर प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियॉ। ईश्वरीय विश्वविश्द्यालय। वो शिवबाबा ही ब्रह्मा द्वारा पढ़ाते हैं। लिखत आदि में भी करैक्शन होती रहती है। नीचे फिर लिखते हैं राजसूय अश्वमेध रुद्रज्ञान यज्ञ। सिर्फ ज्ञान नहीं। रुद्र अक्षर लिखना है। फिर लिखते हैं ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार। दैवी स्वराज्य बाप से ही सतयुगी स्वराज्य का जन्मसिद्ध अधिकार लेना है। यह रुद्रज्ञान यज्ञ भी 5000 वर्ष पहले मिसल स्थापन किया हुआ है। बाबा हिंदी में लेफ्ट हैंड बनवा रहे हैं। हिंदी देख और भी खुश होंगे। अच्छा, अब इस गीत का अर्थ जो कर सकें वो आएं। (4–5 माताओं ने बापदादा के आगे इस गीत का अर्थ किया। बापदादा साथ2 हरेक प्वाइंट पर करैक्शन एडीशन भी करते समझा रहे थे)

यह पुरानी दुनियॉ छोड़नी है। नई दुनियॉ में जाना है। नई दुनियॉ में क्या था वह भी बतलाना है। सतयुगी सूर्यवंशी राजधानी थी। फिर चंद्रवंशी राजधानी हुई। यह 84 का चक्कर सिद्ध कर बतलाना है। हे भारतवासियों तुम अभी कर्मभ्रष्ट–धर्मभ्रष्ट बन गए हो। भारत सोने की चिड़िया थी। अब तो कंगाल है। घर आदि सब बरबाद कर दिया है। एकदम उतरती कला हो गई है। बाप फिर जाकर चढ़ती कला बनाते हैं। अंत में फिर पतित काले बन जाते हैं। फिर बाप आकर कहते हैं अब पवित्र बनो और मुझे याद करो। गीता का भगवान ज्ञान सागर पतित–पावन भी शिव है। ना कि श्रीकृष्ण। हम शिववंशी सब हैं। फिर ब्रह्मा द्वारा पहले2 ब्राह्मण रचे जाते हैं। ऐसे2 समझाने की प्रैक्टिस करनी चाहिए। बाबा ने कह दिया है जो किसको अच्छी रीति समझाय प्रैक्टिस कराय होशियार बनावेंगे उनको हम इनाम देंगे। बाबा की मुरली तो सब सेंटर वाले सुनेंगे। फिर हरेक सेंटर में ऐसे सिखलाना है। बाबा ने सुनाया था कि नेपाल में छोटे2 बच्चों को भी कुकरी पकड़ा सिखलाते हैं। आगे तो मनुष्यों के बलि चढ़ते थे। फिर जो खाते थे उनको आदमखोर कहा जाता था। वो भोग बॉटते थे। टुकड़2 कर सबको खिलाते थे। भक्तिमार्ग में बड़ी खराब रसम थी। फिर गवर्मेंट ने आकर यह सब बंद किया है। बकरा चढ़ाते हैं। फिर घर2 में काटते हैं। बलि चढ़ने का रिवाज था तो तुम बच्चों को यह प्रैक्टिस करनी चाहिए। बुद्धि में धारणा होगी तो नशा अच्छा चढ़ेगा, रोशनी रहेगी। चढ़ती कला कैसे होती है। फिर उतरती कला कैसे होती है। हम भारतवासी ही इतने उॅच थे। अब फिर नीच बन गए हैं। फिर बाप भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। यहॉ तो एक भी पावन नहीं। पतित दुनियॉ है। अब बाप कहते हैं अब मेरे साथ योग लगाओ तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। योगाग्नि से तुम्हारी खाद निकलेगी। तुम सतोप्रधान बन जाएंगे। बाबा की याद सिवाय खाद कब नहीं निकलेगी और पद भी भ्रष्ट हो पड़ेगा। अच्छा, मीठे2 5000 वर्ष बाद फिर से आय मिले हुए बच्चे जो अपने बाप से फिर से सदा सुख का वर्सा ले रहे हैं। ऐसे बच्चों प्रति यादप्यार गुडमार्निंग। ऊँ।

बापदादा का डायरैक्शन–नीचे दी हुई लिखत का वर्सा ले रहे हैं। ऐसे बच्चों प्रति यादप्यार गुडमार्निंग। उॅ। घर के बाहर में या किसी मुख्य स्थानों पर लगा देवे।

प्रिय बहिनों तथा भाइयों,

1–ज्ञान सागर पतित–पावन, सर्व का सद्गति दाता , स्वर्ग का रचयिता परमपिता निराकार शिव ....सम्बंध है?

2–प्रजापिता ब्रह्मा साथ तुम्हारा क्या सम्बंध है?

3–सर्वशास्त्रमयी शिरोमणी श्रीमतभगवतगीता का ...ज्ञान दाता कौन? ए– सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी (84 पुनरजन्म मरण के चक्कर में जाने वाला) दैवी महाराज श्रीकृष्ण ....बी–पतित–पावन ज्ञान सागर , सर्व मनुष्य मात्र का सदगति दाता (पुनर्जन्म मरण रहित) परमप्रिय परमपिता निराकार परमात्मा शिव .....

नोटः–इन पहेलियों को हल करने से आप एक सेकेण्ड में ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार सत और त्रेता ... विश्व का 100 परसेंट पवित्रता, शांति , सुख , सम्पत्ति का दैवी स्वराज्य पद 21 जन्मों लिए फिर से प्राप्त कर सकते हैं 5000 वर्ष आने मुआफिक।